प्रकाशन की तिथि 01.01.2020

ओ३म्

एक प्रति मूल्यः रू. 3.50

शुद्धि समाचार

सन् 1923 में स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा स्थापित

भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा का मासिक मुखपत्र

माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः। अथर्ववेद 12.1.12
भूमि मेरी माता है और मैं उस मातृभूमि का पुत्र हूँ।

वर्ष 43 अंक 01

''शुद्धि ही हिन्दू जाति का जीवन है''

वार्षिक शुल्क : 40 रूपये
आजीवन शुल्क : 300 रूपये

जनवरी 2020 विक्रम सम्वत् 2076 पौष-माघ

सनातन धर्मी नेता - पं. मदनमोहन मालवीय

दूरभाष : 011-23857244

परामर्शदाताः श्री हरबंस लाल कोहली श्री रणवीर सिंह श्री सुभाष चन्द्र दुआ श्री सुरेन्द्र गुप्त

प्रबन्धकः श्री नरेन्द्र मोहन वलेचा

मकर संक्रान्ति

(एकात्मा बढ़ाने का उत्सव है)

हिन्दू समाज के विविध उत्सवों में कुछ ऐसे उत्सव हैं। जिनकी न केवल धार्मिक दृष्टि से बल्कि ऐतिहासिक एवं सामाजिक दृष्टि से भी विशेष उपयोगिता है। मकर संक्रान्ति भी ऐसा ही उत्सव है।

अंधकार से प्रकाश की ओर जाने का उत्सव-यह उत्सव सूर्य के मकर राशि में प्रवेश करने के अवसर पर मनाया जाता है। यह संक्रमण पिछले शताधिक वर्षों से हर बार 14 जनवरी को ही होता है। इसकी वजह यही है कि सौर मास की प्रथम तिथि एवं 14 जनवरी एक दिन ही पड़ती है। इसके साथ ही सूर्य दक्षिणायन से उत्तर दिशा की ओर होने लगता है। फलतः दिन के बड़े होने और रात के छोटे होने का क्रम शुरु हो जाता है। धरती पर अंधकार कम होने लगता है और प्रकाश बढ़ने लगता है। इसका प्रभाव यह होता है कि सारे वातावरण चराचर जगत् में सूर्य से अधिक मात्रा में ऊर्जा मिलने के कारण एक आशा, उत्साह, उमंग और जीवन का संचार होने लगता है। एक नवीन जीवन शक्ति का उदय प्रकृति में होने लगता है।

अतः यह दिन समाज को अज्ञानरूपी अंधकार से प्रकाश रूपी ज्ञान की ओर, निराशा से आशा की ओर, और अवगुणों का नाश कर सद्गुणों की ओर जाने की प्रेरणा देता है। इसी दिन समाज को सारे भेदभाव भुलाकर एकात्मता का साक्षात्कार कराने का उदात्त संस्कार दिया जाता है।

एकात्मता का संदेश देता है। इस पर्व समाज में एकात्मा एवं दानशीलता बढ़ाने के लिए हमारे पूर्वजों ने इस दिन दान-पुण्य का महात्मय बताया है। इस दिन तिल एवं गुड़ का दान किया जाता है। इस दिन का प्रतीकात्मक अर्थ अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। तिल में तेल निहित होता है। तेल स्नेहक के रूप में काम आता है। अतः तिल दान का निहितार्थ है स्नेह का दान। ऐसा दान समाज के विभिन्न वर्गों में आपसी टकाराहट खत्म करने और परस्पर स्नेह भाव की अभिवृद्धि की दृष्टि से उचित माना जाता है।

इसी तरह गुड़ मधुरता का प्रतीक है। इसके दान का तात्पर्य है जीवन में मधुरता बढ़े। जिस तरह तिल गुड़ से बंधक लड्डू बन जाते हैं, उसी प्रकार समाज के सभी लोग आपसी मधुर व्यवहार से परस्पर एकात्मता महसूस करें। यह भाव जगाने का संदेश मकर संक्रान्ति उत्सव देता है। दान का सामाजिक दृष्टि से भी विशेष महत्त्व है। इससे समाज में धन एवं विविध सामग्रियों के समान वितरण में विशेष मदद मिलती है।

लोगों में उदारता आती है वंचित एवं साधनहीन वर्ग को सहारा मिलता है। इससे सामर्थ्यवान (सम्पन्न) एवं असमर्थ वर्ग (वंचित) में आपसी सद्भावना बढ़ती है। इस दिन खिचड़ी का दान होता है तथा उसे बनाकर खाया भी जाता है। खिचड़ी भी समरसता का प्रतीक है। यह स्वास्थ्य की दृष्टि से उपयोगी और स्वादिष्ट होती है। इस प्रकार खिचड़ी के सामूहिक रूप से सहभोज में सरलता की अभिवृद्धि की कामना भी छिपी हुई है।

मकर संक्रान्ति के अवसर पर तिल, गुड़, खिचड़ी आदि का खाने-पीने में उपयोग, स्वास्थ्य की दृष्टि से लाभदायक है। आयुर्वेद के अनुसार तिल गुड़ की चीजें शरीर के लिए पुष्टिकारक हैं। इस दिन स्वजनों के साथ, समाज बंधुओं के साथ इनका सेवन अत्यंत उपयोगी है। महाराष्ट्र में 'तिल गुड़ध्या गोड़ बोला' कहने की प्रथा इसकी भावना का द्योतक है।

मकर संक्रान्ति पर प्रायः सर्वत्र पतंगबाजी के आयोजन होते हैं। यह एक प्राचीन क्रीड़ा है। इससे निरंतर ऊँचाइयों की ओर बढ़ने की प्रेरणा मिलती है। तथा इसी बहाने धूप स्नान एवं सूर्यदर्शन भी हो जाता है। इन बातों का स्वास्थ्य की दृष्टि से विशेष महत्त्व है।

देशभर में मनता है यह पर्व-मकर संक्रान्ति देशभर में मनाया जाता है। उत्तर भारत में इसे इसी नाम से, जबकि दक्षिण भारत में इसे पोंगल के नाम से लोग उत्साहपूर्वक मनाते हैं। पंजाब में मकर संक्रान्ति की पूर्व रात्रि को लोहड़ी पर्व मनाया जाता है। गुरु गोविन्द सिंह के 40 शिष्यों ने मकर

(शेष पृष्ठ 3 पर)

शुद्धि समाचार में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशन का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

बसंत पंचमी

-चमनलाल

बसंत ऋतु अति सुन्दर रमणीय और मनमोहक है। हर्ष और उल्लास का संदेश लाने वाली यह ऋतु जड़ चेतन सारे जगत् को नवजीवन से भर देती है। जैसे प्रातः सूर्य भगवान के उदय होने पर रात्रि का अंधकार छाई-माई हो जाता है और चोर-उचक्के अपने गुप्त स्थानों को भागने लगते हैं, ठीक इसी प्रकार बसंत ऋतु के आगमन पर शरद ऋतु की कठोरता समाप्त होने लगती है। मानों प्रकृति देवी एक रंग-बिरंगी सुन्दर चुनरी ओढ़कर एक सुन्दर नवविवाहित युवती की तरह उल्लास और उमंगों से भरी नृत्य करती हुई प्रतीत होती है। पतझड़ शिशिर ने जब अपने प्रकोप से वृक्षों, पेड़ों के पत्तों को सुखाकर धरती पर गिरा दिया था, अब बसंत ने अपनी उदारता से उन सबको नवजीवन देकर पुनः हरा-भरा कर दिया है। इसके फलस्वरूप कोमल, सुन्दर, नन्ही-नन्ही मोहक मुलायम पत्तियों से लदी वृक्षों की टहनियां और लताएं कैसे सुहावनी लगने लगती हैं। प्रकृति में चहुंओर नया वातावरण और उल्लास भरा जीवन दिखाई देता है, जिधर भी दृष्टिगत करो, हरियाली ही हरियाली दिखाई देती है, कहीं-कहीं तो दूर तक दृष्टि दौड़ाने पर प्रतीत होता है, जैसे हरी-हरी मुलायम मखमल का फर्श बिछा हो। सरसों के पीले बसंती रंग के फूलों से भरे खेत अपनी निराली आभा बिखेरते दिखाई देते हैं। आम के पेड़ों पर नया बौर आने लगता है। बगीचों और गृह-वाटिकाओं में तरह-तरह के रंग-बिरंगे फूल खिलने लगते हैं, जो अपनी मीठी-मीठी भीनी-भीनी सुगंध से सारे वातावरण को महका देते हैं। भौंरे इनका रस लेने हेतु इन पर मंडराते हुए बड़े अच्छे लगते हैं। मधुमक्खियों के झुंड के झुंड फूलों में शहद एकत्र करना आरम्भ कर देते हें। बगीचों में कोयल, पक्षी चहकने लगते हैं, मानो वह भी अपनी बोली में बसंत देवी का स्वागत गीत गा रहे हों। इसलिए तो पाश्चात्य देशों के बड़े-बड़े कवियों ने कोयल पक्षी को बसंत का दूत कहकर पुकारा है, शीतल समीर मन्द-मन्द बहता हुआ जब शरीर को स्पर्श करता है, तो मानो शरीर में एक नई स्फूर्ति का संचार हो जाता है। इतना ही नहीं, छोटे-छोटे सुन्दर पक्षी जो शीत के कारण बसंत के आगमन से पूर्व कहीं अज्ञात स्थान में मुंह छिपाए बैठे थे, इस जीवनदायिनी, सुहावनी ऋतु के आने पर अपनी मधुरवाणी में इस ऋतुराज का स्वागत करके अपने-अपने पुराने स्थानों को उड़ जाते हैं। इस ऋतुराज के अद्भुत दृश्यों को देखकर मानव भी भला क्यों न प्रभावित हो। अपने इर्द-गिर्द भव्य, मोहक सुन्दर प्राकृतिक दृश्यों को देखकर यह भी मस्ती में भरा झूमने लगता है और अपने भीतर एक नए जीवन और चेतना का संचार अनुभव करने लगता है। महीनों का पड़ा रोगी मनुष्य भी इस मौसम में एक बार तो अपूर्व स्फूर्ति अनुभव करके मस्त हो जाता है और अपनी पीड़ा और रोग को भुला बैठता है। ऐसा सुन्दर प्रेरणादायक वातावरण उपस्थित होने पर सभी छोटे-बड़े उल्लास के साथ इस पर्व को मनाते हैं। कहीं-कहीं लोग इन दिनों में नाच-गाने रासलीलाओं तथा स्वांगों का आयोजन करके अपनी मानसिक प्रसन्नता का प्रदर्शन करते हैं। गुजरात, हरियाणा, मध्यप्रदेश तथा कुछ अन्य प्रदेशों में इस दिन बाल-वृद्ध पतंग उड़ाकर अपनी खुशी का इजहार करते हैं।

कुछ विचित्र सी ही बात प्रतीत होती है कि कालांतर में इस देश के निवासियों के ऋतुपरक तथा प्राकृतिक त्यौहारों के साथ किसी न किसी संस्कारी व्यक्ति विशेष के जीवन की घटना का संबंध हो गया होता है। उदाहरण के लिए शिवरात्रि के साथ ऋषि दयानन्द के बोध की घटना, होली के साथ भक्त प्रहलाद की घटना, दीपावली के साथ महर्षि बलिदान, स्वामी रामतीर्थ की जीवित जल-समाधि और महावीर स्वामी के निर्वाण की घटना इत्यादि। ठीक इसी प्रकार इस प्रेरणादायक बसंत पर्व के साथ गत तीन-चार सौ वर्षों से आर्यवीर बालक हकीकत राय के बलिदान की रोमांचकारी घटना भी जुड़ गई है। इस दिन मुगल शासन के समय में धर्मांध मौलवियों तथा मुल्लाओं के अन्यायपूर्ण अमानुषिक फतवों (आदेशों) का शिकार हो एक चौदह वर्षीय बालक, अपने माता-पिता की एकमात्रा आशा और जीवन का सहारा, एक यवुती का सुहाग अपने प्यारे धर्म वैदिक धर्म की रक्षा हेतु अपने प्राणों की बलि चढ़ाया गया। इस वीर बालक हकीकत ने हंसते-हंसते जल्लादों की तलवार के आगे अपनी गर्दन यह कहते हुए झुका दी-कांट सकते हो तो बाहर का हकीकत काटो, काट सकती असल हकीकत राय को यह तलवार नहीं।

इस बलिदान की याद में शाह आलम बाग लाहौर में प्रतिवर्ष इस दिन बड़ा भारी मेला लगता रहा, देश के विभाजन तक। उसके पश्चात् कुछ वर्षों से नई दिल्ली में हिन्दु महासभा के विशाल प्रांगण में यह मेला लगता है। जहां भाव भरी श्रद्धांजलि उस वीर को दी जाती है।

मातृ-पितृ श्लोक

त्वमेव माता ममता त्वमेव, त्वमेव वन्धा सुखदा त्वमेव। त्वमेव धनदा बलदा, त्वमेव, त्वमेव सर्व मम मातृदेवि॥

अर्थः-अरि माँ! तुम ही मेरा निर्माण करने वाली हो। तुम्हीं मेरी सच्ची ममता हो। तुम ही वन्दनीया और सुख देने वाली हो। धन तथा बल के देने वाली आप ही हो। और क्या कहूँ माता। तुम ही मेरे लिये सब कुछ हो।

प्रातर् नमामि जननीचरणाररविन्दम्, नित्यं स्मरामि तव चेह परोपकार्यम्। नूनं सदा तव वदामि सुकीर्तिजातम्, गीतं नु देवजनवृन्दवरैः सुगीतम्॥

अर्थः- मैं शुभ ब्राह्ममुहूर्त में सर्वप्रथम जननी माँ के चरण कमलों में नमन करता हूं। हमेशा ही तेरे परोपकार कार्यों का स्मरण करता हूं। सदैव तेरी बड़ाई के गीत गाता हूँ। तेरे जिन सुन्दर गीतों का गायन देवताओं ने किया है। उनका कीर्तन मैं भी करता रहता हूं।

माता भवति निर्माता माता न्यायनियामिनी। मातैव नु सुधर्मा च माता च कुलवर्धिनी॥

अर्थः-माता वह है जो संतान का अच्छी प्रकार निर्माण करना जानती है। माता ही न्याय नियमों को धारण करने वाली है। संसार में माता ही धर्मरूपा है और माता ही कुल बढ़ाने वाली है।

निर्वासनः स प्रददाति वस्त्रमूढ़वाऽपि भारं न च भारकर्ता। दुःखस्यहर्त्ता च सुखस्य दाता लोके नु मान्यः स पिता सदा में॥

अर्थः-स्वयं वस्त्रहीन होकर भी सन्तान को वस्त्र देता है। दायित्व का बोझ उठाता है। परन्तु किसी के लिए भार नहीं बनता। परिवार के दुःखों का हर्ता परन्तु सुखप्रदाता है। इस प्रकार के मेरे आराध्य पिता सम्मान के पात्र है।

पित्रा नु सर्व खलु निमितं मे, पुष्टं शरीरं हि शुभं च चेतः। शुद्ध चरित्रं ननु येन जातम्, स्वर्गश्च मोक्षश्च पितुस्सुगेहे॥

अर्थः-पिता सन्तान के लिए सब कुछ बनाता है। हृष्ट-पुष्ट, तन, निर्मल, मन, पवित्र, चरित्र उसकी देन है। यदि माना जाय तो पिता के घर में स्वर्ग और मोक्ष है।

सम्पादकीय

क्रान्तिकारियों के प्रेरणास्त्रोत एवं मार्गदर्शक पं. रामप्रसाद बिस्मिल

– आचार्य गवेन्द्र शास्त्री, मो. 9810884124

भारत देश का इतिहास क्रान्ति ज्वाला से सदैव जाज्वल्यमान रहा है। क्रान्ति की मशाल थामने वाले नव युवकों का निर्माण और मातृभूमि पर न्यौछावर होने की भावना भरना आर्य समाज के गौरवपूर्ण इतिहास की स्वर्णिम परम्परा रही है। भारतीय क्रान्तिदल के अमर सेनापति तथा क्रान्तिकारियों के प्रेरणास्त्रोत एवं मार्गदर्शक पं. रामप्रसाद ''बिस्मिल'' का अमर बलिदान इसी दिसम्बर मास की 19वीं तारीख को सन् 1927 ई. में हुआ था, जब क्रूर अंग्रेजी सरकार ने उन्हें गोरखपुर की जेल में और उनके अभिन्न मित्र श्री अश्फाकउल्ला खाँ को फैजाबाद में फाँसी पर चढ़ा दिया था। बिस्मिल जी का व्यक्तित्व विकास आर्य समाज तथा आर्य कुमार सभा की छत्रछाया में हुआ। स्वामी सोमदेव जी की प्रेरणा और प. गेंदालाल जी दीक्षित जैसे स्वनाम धन्य देश भक्तों की संगति ने आपको परम आस्तिक और आजीवन देशहित में कार्य करने की प्रेरणा प्रदान की। पण्डित जी पूरी तरह भारत माता के लिए समर्पित जीवन जीते रहे और आमरण भारतीय क्रान्तिकारी दल के मार्गदर्शक बने रहे। विविध गुणों से सम्पन्न बिस्मिल जी एक अच्छे कवि भी थे। अपनी एक कविता में उन्होंने स्वयं लिखा है।

यदि देशहित मरना पड़े मुझको सहस्त्रों बार भी, तो भी न इस दु:ख को निज ध्यान में लाऊँ कभी, हे ईश! भारत वर्ष में शतबार मेरा जन्म हे, कारण सदा ही मृत्यु का देशोपकारक कर्म हो। भारत माता की दासता की बेड़ियों को काटने तथा जनता को देश सेवा के लिए सुशिक्षित करने की उनकी योजना थी जिसे वे आजीवन करते रहे। जनता की प्रवृत्ति देश सेवा की हो, उनमें देश के लिए बलिदान होने की भावना हो।

शोषण और अत्याचार भ्रष्टाचार के साथ-साथ भारत की परतन्त्रता समाप्त हो यह उनकी हार्दिक इच्छा थी। क्रूर अंग्रेजों द्वारा दी गई सजा से न तो वह निराश थे न ही भयभीत। क्योंकि देश सेवा का व्रत उन्होंने बहुत सोच विचारकर लिया था। अपना कर्तव्य बोध और ईश्वरीय न्याय

व्यवस्था पर उनकी पूर्ण आस्था थी। फाँसी के तख्ते पर ले जाने वाले लोग जब आए तो वह ''वन्दे मातरम्'' और ''भारत माता की जय'' के नारे लगाते हुए गये। उस समय उन्होंने एक कविता पढ़ी:

मालिक तेरी रजा रहे और तू ही तू रहे,
बाकी न मैं रहूं-न मेरी आरजू रहे।
तब तक कि तन में जान रंगों में लहू रहे,
तेरा ही जिक्र या, तेरी जुस्तजु रहे॥

फाँसी के समय उन्होंने ईश्वर की विशेष प्रार्थना की तथा ''विश्वानि देवसतिर्दुरितानि...'' आदि मन्त्रों का पाठ करते हुए वे गोरखपुर की जेल में फाँसी के फन्दे पर झूल गये।

बिस्मिल जी के फाँसी पर चढ़ने के दृश्य का वर्णन करते हुए शहीदे-आजम भगत सिंह ने लिखा है.... फिर ईश्वर के आगे प्रार्थना की और फिर एक मन्त्र पढ़ना शुरु किया। रस्सी खींची गई। रामप्रसाद जी फाँसी पर लटक गए। आज वह वीर इस संसार में नहीं है। उसे अंग्रेजी सरकार ने अपना खौफनाक दुश्मन समझा। आम ख्याल यह है कि वह इस गुलाम देश में जन्म लेकर भी एक बड़ा भारी बोझ बन गया था और लड़ाई की विद्या से खूब परिचित था। आपको मैनपुरी षड्यन्त्र के नेता श्री गेंदा लाल दीक्षित जैसे शूरवीर ने विशेषतौर पर शिक्षा देकर तैयार किया था। मैनपुरी के मुकदमें के समय आप भागकर नेपाल चले गये थे। अब वही शिक्षा आपकी मृत्यु का एक कारण बन गई। 7 बजे आपकी लाश मिली और बड़ा भारी जुलूस निकला। स्वदेश प्रेम में आपकी माता ने कहा-''मैं अपने पुत्र की इस मृत्यु पर प्रसन्न हूँ दु:खी नहीं। मैं श्री रामचन्द्र जैसा ही पुत्र चाहती थी। बालो श्री रामचन्द्र की जय।''

पाठको! जो जाति अपने बलिदानियों और देश भक्तों को कृतज्ञता पूर्वक स्मरण नहीं करती, उसका विनाश सुनिश्चित होता है और वह कभी संकट से मुक्त नहीं हो सकती। आज की युवा पीढ़ी मातृभूमि के लिए समर्पित इन महान् क्रान्तिकारियों की भावना, उद्देश्य और कार्यशैली से परिचित होकर इनसे देश और जनता की सेवा की प्रेरणा लेकर प्राण पण से उद्देश्य प्राप्ति हेतु लगे यही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी। उनका अपूर्ण कार्य तभी पूर्ण होगा। आज केवल पात्र बदल गए हैं, नाटक जारी है। आवश्यकता है कि आज की युवा शक्ति उन्हीं क्रान्तिकारियों के समान भ्रष्टाचार अन्याय, उत्पीड़न और शोषण के विरूद्ध अपनी पूरीक्षमता से लड़कर लक्ष्य प्राप्ति करे तभी शहीदों की आत्मा को शान्ति और सद्गति मिलेगी।

(पृष्ठ 1 का शेष)

संक्रान्ति के पवित्र दिवस पर मुक्तसर में दशम गुरु को बचाने के लिए अपना बलिदान दिया था। उन शिष्यों की याद में हर साल मुक्तसर में एक मेला आता है। प्रसिद्ध तीर्थ स्थल गंगासागर में इस दिन लाखों लोग स्नान करते हैं। पूरे देश के श्रद्धालु मकर संक्रान्ति के दिन गंगा-सागर पहुंचते हैं।

संघ के छह उत्सवों में से एक राष्ट्रीय स्वयं सेवक ने राष्ट्र जीवन को सामर्थ्यशाली बनाने वाले पर्वों को उत्सवों के रूप में मनाने की परम्परा शुरु की है। मकर संक्रान्ति भी वर्ष में मनाए जाने वाले छह उत्सवों में से एक है। उत्सव के दिन संघ स्थान पर ध्वजा के बाद उपस्थित स्वयंसेवकों को तिल की बनी वस्तुएं, रेवड़ी, गजक आदि वितरिक की जाती हैं। स्वयंसेवक अपने घरों से ये वस्तुएं लाते हैं। सेवा बस्तियों में सामूहिक-खिचड़ी आयोजन जैसे अन्याय कार्य भी इस दिन रखे जाते हैं।

ओ३म्

हे ज्ञानवान भगवन् हमको भी ज्ञान दे दो।
करूणा के चार छींटे करूणा निधान दे दो।।

सुलझा सकें हम अपने जीवन की उलझनों को।
प्रज्ञा ऋतम्भरा सी बुद्धि का दान दे दो।।1।।

अपनी मदद हमेशा खुद आप करें जो।
इन बाजुओं में शक्ति हे शक्तिमान दे दे।।2।।

दाता तुम्हारे दर पे किस चीज की कमी है।
चाहे तो निर्धनों की दौलत की खान दे दो।।3।।

हे ईश तुम हो सबकी बिगड़ी बनाने वाले।
जीवन सफल बने जो थोड़ा सा ज्ञान दे दो।।4।।

डर है पथिक तुम्हारा रास्ता न भूल जाये।
भक्तों की मण्डली में हमको भी स्थान दे दो।।5।।

-आचार्य सतीश सत्यम्

उपनिषद् ज्ञान

उपनिषद्

1. उपनिषद् शब्द की व्युत्पत्ति उप+नि+षद् शब्दों से हुई है जिसका क्रमशः अर्थ है समीप+निष्ठापूर्वक श्रवण+परमात्मा की प्राप्ति। अतः उपनिषद् का शाब्दिक अर्थ है परमात्मा की प्राप्ति के लिए निष्ठापूर्वक श्रवण करना और ज्ञानार्जन करना।
2. महर्षि दयानन्द ने केवल 11 उपनिषदों को ही आर्ष उपनिषद् माना है- (1) ईशावास्योपनिषद् (2) केनोपनिषद् (3) कठोपनिषद् (4) ऐतरेयोपनिषद् (5) तैत्तिरीयोपनिष्द् (6) मुण्डकोपनिषद् (7) मांडुक्योपनिषद् (8) प्रश्नोपनिषद् (9) छांदोग्योपनिषद् (1) बृहदरारण्यकोपनिषद् (11) श्वेताश्वतरोपनिषद्
3. आर्ष उपनिषदों में ऋग्वेद की ऐतरेय और तैत्तिरीय उपनिषदें, यजुर्वेद की ईश, कठ, बृहदारण्यक, श्वेताश्वतर उपनिषदें,सामवेद की केन और छांदोग्य उपनिषदें अथर्ववेद की मुण्डक, माडूक्य और प्रश्न उपनिषदें आती हैं।
4. आर्ष उपनिषदों में सबसे छोटी उपनिषद् माण्डुक्योपनिषद् है।
5. आर्ष उपनिषदों में सबसे बड़ी उपनिषद् बृहदारण्यकोपनिषद् है। इसमें 6 अध्याय और 435 श्लोक हैं।
6. उपनिषदों की संख्या के विषय में विभिन्न विद्वानों के विभिन्न मत हैं। अतः इनकी संख्या के बारे में कुछ भी नहीं कहा जा सकता। परन्तु मुक्तिकोपनिषद् जिस में राम एवं हनुमान के मध्य हुये वार्तालाप में 108 उपनिषदों की सूची दी गई है।

ईशोपनिषद्

7. सारी उपनिषदों में ईशावास्योपनिषद् को सर्वश्रेष्ठ उपनिषद् माना गया है क्योंकि इसमें परमात्मा व जगत् के स्वरूप, मानव के कर्त्तव्यों, संसार में जीने की कला, विद्या व अविद्या, भौतिक एवं आध्यात्मिक सुख कैसे उपलब्ध किया जा सकता है आदि का उल्लेख किया गया है। वस्तुतः इसमें अध्ययन का निरूपण बड़े मार्मिक एवं रोचक ढंग से किया गया है। यहाँ तक कि विद्वानों का विचार है कि यदि कभी हमारा समग्र आध्यात्मिक साहित्य नष्ट भी हो जाये, परन्तु इस उपनिषद् के प्रथम 2 मन्त्र भी हमारे पास सुरक्षित रह जाये, तो भी हम समूचे अध्यात्म का भवन पुनः खड़ा कर सकते हैं। सारी उपनिषदें इस उपनिषद् के प्रथम मन्त्र की व्याख्या है।

कठोपनिषद्

8. उद्दालक ऋषि के पुत्र नचिकेता ने यमराज से निम्नलिखित 3 वर मांगे थे।
   (1) जब वह वापिस अपने पिता के पास मृत्युलोक में जाए तो पिता उसेप पहचान ले और उसका क्रोध उस पर बिल्कुल भी न रहे।
   (2) दूसरे वर में उसने यज्ञ में अग्निचयन की विधि पूछ ली। जहाँ पर यज्ञ होगा वहाँ पर सुख, शांति एवं आनन्द होगा।
   3. तीसरे वर में उसने गूढ़तम आत्मविद्या प्राप्त करने की इच्छा प्रकट की थी।

प्रश्नोपनिषद्

9. इस उपनिषद् को प्रश्नोपनिषद् इसलिए कहा जाता है कि इसमें छः ऋषियों ने पिप्पलाद ऋषि से छः प्रश्न पूछे थे। उन छः ऋषियों के नाम हैं- (1) सुरेशा, (2) कबन्धी, (3) कौशल्य, (4) गार्ग्य मुनि, (5) वेदर्भि, (6) सत्यकाम। पिप्पलाद शब्द का अर्थ है जो पिप्पल की कलियाँ खाकर ही गुजारा करता हो।
10. शरीर में पाँच प्राण निम्नलिखित स्थानों में रहते हैं- हृदय में प्राण, गुदा में अपान, नाभि में समान, नाड़ियों में व्यान और सुषुम्णा नाड़ी में उदान रहते हैं।
11. सोलह कलाएं निम्नलिखित हैं- (1) प्राण, (2) श्रद्धा, (3)पृथिवी, (4) जल, (5) वायु,(6) आकाश, (7) ज्योति, (8) इन्द्रिय, (9) मन, (10) अन्न, (11) मन्त्र, (12) तप, (13) वीर्य, (14) लोक, (15) कर्म, (16) नाम।

मुण्डकोपनिषद्

12. अपरा विद्या (sciencetific knowledge) में वेद, शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरूक्त, छंद और ज्योतिष का ज्ञान आता है और परा विद्या (spiritual knowledge) में अक्षर ब्रह्म का ज्ञान या अध्यात्म विद्या आती है।
13. जो व्यक्ति को सुषुप्ति में शरीर और आत्मा के संबंध के टूटने से आनन्द की अनुभूति होती है। वह तो निषेधात्मक आनन्द (Negative Bliss) है। परन्तु जब आत्मा शरीर में रहता हुआ शरीर से अलग होकर परमात्मा के साथ संबंध स्थापित करता है तो उससे निश्चयात्मक आनन्द (Positive Bliss) की अनुभूति होती है। यही ब्रह्मानन्द है।

ऐतरेयापनिषद्

14. आत्मा जागृतावस्था में नेत्रों में, स्वप्नावस्था में कंठ में और सुषुप्तावस्था में हृदय में रहता है। आत्मा के विषय में ऐसा ही बृहदारण्यकोपनिषद् में भी लिखा है। इसके अतिरिक्त इसमें आत्मा के चौथे रूप को तुरीयरूप, अनिवर्चनीय रूप और नेति-नेति भी कहा गया है जोकि अग्राह्य है।

तैत्तिरीयोपनिषद्

15. तैत्तिरीयोपनिषद् में 3 वल्लियां हैं। (1) शिक्षा वल्ली, (2) ब्रह्मानन्द वल्ली, (3) भृगुवल्ली।
16. तैत्तिरीयोपनिषद् के अनुसार मानव शरीर में निम्नलिखित 5 कोष हैं- (1) अन्नमय कोष-स्थूल शरीर (2) प्राणमय कोष, मनोमय कोष, विज्ञानमय कोष (आत्मा)-सूक्ष्म शरीर, आनन्दमय कोष-कारण शरीर
17. वरूण ने अपने पुत्र भृगु को उपदेश दिया था कि ब्रह्मा या आनन्द, अन्न, प्राण, मन, विज्ञान (आत्मा) में नहीं है। अपितु आनन्द परमात्मा का पर्यायवाची शब्द है। अतः आनन्द ही ब्रह्म है।

छांदोग्योपनिषद्

18. उद्गीथ तीन अक्षरों का उत्+गी+थ से बना है। शरीर में प्राण ही उत् है क्योंकि प्राणों के होते हुए मानव हर प्रकार की उन्नति कर सकता है। अन्न धर्म है अन्न में ही सब कुछ स्थित है। वस्तुतः ओ३म् की उच्च स्वर से उपासना करने का नाम ही उद्गीथ है। उद्गीथ व प्रणव एक ही है। ये दोनों पर्यायवाची शब्द हैं।
19. पाँच इन्द्रियों, वाणी, आँख, कान, मन और प्राण में प्राण सर्वश्रेष्ठ हैं क्योंकि वाणी, आँख, कान और मन के न होने से व्यक्ति जीवित रह सकता है। परन्तु यदि शरीर से प्राण निकल जायें तो वह मर जाता है।
20. यज्ञ के निम्नलिखित 5 अंग होते हैं-
   (1) दीक्षाः जो व्यक्ति खाता व पीता है परन्तु इनमें रमंता नहीं। उस व्यक्ति का जीवन मानो दीक्षा का जीवन है।
   (2) उपसदः इसके विपरीत जो व्यक्ति खाता-पीता है और उसमें रमा भी रहता है। उसका जीवन उपसद का जीवन होता है। आम विषयी व्यक्ति ऐसा ही है। संसार में अधिकांश व्यक्ति ऐसे ही होते हैं।
   (3) दक्षिणाः जो व्यक्ति दान, तप, अहिंसा, सत्य का जीवन व्यतीत करता है। उसका जीवन दक्षिणा का जीवन होता है।
   (4) स्तुत शास्त्रः जो व्यक्ति खूब हँसता, खाता व मैथून करता है उसका जीवन स्तुत शास्त्र होता है।
   (5) अवभृथः जीवन रूपी यज्ञ में व्यक्ति का मनुष्य रूप में पुनर्जन्म ही सोष्यति व असीष्ट है। सोष्यति का अर्थ है रस निचोड़ेगा और असीष्ट का अर्थ रस निचोड़ा। इसे ही अवभृथ का जीवन कहा जाता है।
21. तत्वमसि का अर्थ है तू वह है। तेरा आत्मतत्व ही सत् है न कि तेरा शरीर। यह उपदेश अरूण ने अपने पुत्र श्वेतकेतु को दिया था।
22. अन्न और जल तीन प्रकार का होता है। खाये हुए अन्न का स्थूल भाग मल बनता है, जो मध्य भाग है वह माँस बनता है और जो सूक्ष्म भाग है वह मन बन जाता है। इसी प्रकार पिये हुए जल का स्थूल भाग मूत्र बन जाता है, जो मध्य भाग है वह रक्त बन जाता है और जो सूक्ष्म भाग है वह प्राण बन जाता है।

बृहदारण्यकोपनिषद्

23. सत्य ही धर्म है तभी सत्य बोलने वाले के लिए कहा जाता है कि यह धर्म कहता है और धर्म बोलने वाले के लिए कहा जाता है यह सत्य कहता है। वस्तुतः धर्म और सत्य दोनों पर्यायवाची शब्द है। **(शेष पृष्ठ 5 पर)**

(पृष्ठ 4 का शेष)

24. याज्ञवल्क्य ने अपनी पत्नी मैत्रेयी को आत्मोपदेश देते हुए कहा था अपनी आत्मा की कामना के लिए ही धन, पति, पत्नी, पुत्र, भाई, बहन अदि प्रिय होते हैं। वह आत्मा ही तो दृष्टव्य, श्रोतव्य, मन्तव्य और निदिध्यासितव्य है। उसी को देख, सुन, जान और उसी का ध्यान कर। ऐसा करने से ही सब गांठे खुल जाती हैं। अत: आत्मा को जानो... आत्मा को जानो।

वस्तुत: प्यार तभी तक रहता है जब तक एक दूसरे को प्यार करते रहो। यदि ऐसा होता तो आज तक कभी भी कोई पिता अपने पुत्र को घर से निकालकर अपनी सम्पत्ति आदि से वंचित न करता अथवा पुत्र अपने पिता को घर से न निकालता। इसी प्रकार किसी भी पति-पत्नी में तलाक को लेकर अलग होने की भावना उत्पन्न न होती। अत: हम किसी को भी तभी तक प्रेम करते हैं जब तक हमारी आत्मा को वह संतुष्ट करता रहता है, जो भी हमारी आत्मा को दु:खी करता है तो हम उससे छुटकारा पाने के लिए तैयार हो जाते हैं। वस्तुत: जब हम एक दूसरे से प्रेम कर रहे होते हैं तो हम अपनी आत्मा से प्रेम कर रहे होते हैं।

25. याज्ञवल्क्य ने अपनी पत्नी मैत्रेयी को ब्रह्मविद्याका उपदेश देते हुए कहा थाप कि पति के प्रयोजन के लिए पति प्रिय नहीं होता परन्तु अपनी आत्मा के ही प्रयोजन के लिए वह प्रिय होता है। स्त्री के प्रयोजन के लिए स्त्री प्रिय नहीं होती परन्तु अपने ही प्रयोजन के लिए स्त्री प्रिय होती है। अत: प्रत्येक वस्तु अपने ही प्रयोजन के लिए प्रिय लगती है। अत: संसार का कोई भी व्यक्ति किसी भी व्यक्ति के लिए कुछ भी नहीं कर सकता। जब तक उसे दिव्यानन्द या ब्रह्मानन्द प्राप्त न हो जाये। संसार के सब व्यक्ति अपनी स्वार्थ के लिए ही कार्य करते हैं। परन्तु परमात्मा एवं महापुरुष केवल दूसरों के कल्याण के लिए ही कार्य करते हैं। क्योंकि परमात्मा ही आनन्द है ओर महापुरुष को आनंदानुभूति हो चुकी है।

कर्म का चिन्तन

- कर्म करने में ही तुम्हारा अधिकार है, फल प्राप्त करने में नहीं। फल की इच्छा छोड़कर निरन्तर कर्त्तव्य कर्म करो। जो फल की अभिलाषा छोड़कर कर्म करते हैं, उन्हें अवश्य मोक्ष-पद प्राप्त होता है। **- गीता**
- हमारे दायें हाथ में कर्म है, बायें हाथ में जय। **- अथर्ववेद**
- कर्म वह आइना है, जो हमारा स्वरूप हमें दिखा देता है। अतएव हमें कर्म का अहसानमन्द होना चाहिए। **- विनोवा भावे**
- अतीत में जैसा भी कुछ कर्म किया गया है, भविष्य में वह उसी रूप में उपस्थित होता है। **- महावीर स्वामी**

भारत में गुरुकुल परम्परा

मनुष्य इस धरती पर जन्म लेकर मानवोचित तरीके से ही जीकर सन्तोष व शान्ति प्राप्त कर सकता है। चिन्तनशील होना व्यक्ति का स्वभाव है। चिन्तनशीलता ही सैद्धान्तिक स्वरूप प्रदान करती है और जीवन का सैद्धान्तिक होना ही शिक्षा कहलाता है। शिक्षा का दूसरा नाम अनुशासन भी होता है। अनुशासित जीवन को बिताने के लिए ऋषियों ने चार आश्रम में विभाजित किया-1.ब्रह्मचर्य, 2. गृहस्थ, 3. वानप्रस्थ, 4. संन्यास।

ब्रह्मचर्य अवस्था में विद्या व भक्ति अर्जन करना। गृहस्थाश्रम में भौतिक प्रवृत्ति व जिम्मेदारी पूर्वक परिवार पालन करना। वानप्रस्थाश्रम में पति-पत्नी दोनों ही घर के दायित्वों को योग्य पुत्रों को सौंपकर उनके कार्यों का निरीक्षण व ईश्वर-चिन्तन करें। संन्यास आश्रम में सारी भौतिक प्रवृत्तियों का त्याग करके केवल ईश्वर-चिन्तन करना चाहिए।

इन आश्रमों का मूल ब्रह्मचर्य आश्रम है। यही अवस्था मनुष्य के शारीरिक व मानसिक विकास की अवस्था है। ब्रह्मचर्य आश्रम में मानसिक व शारीरिक विकास के लिए गुरुकुलों में प्रवेश कराए गए बालकों का सर्वप्रथम यज्ञोपवीत संस्कार गुरु करता था, जिसमें मनुस्मृति के अनुसार-

गर्भाष्टमेऽब्देकुर्वीत ब्राह्मणस्योपनयनम्।
गर्भादेकादशे राज्ञो गर्भात्तु द्वादशे विश:॥

'गर्भ के आठवें वर्ष ब्राह्मण, ग्यारहवें वर्ष क्षत्रिय और बारहवें वर्ष वैश्य यज्ञोपवीत धारण करे।' यज्ञोपवीत संस्कार के बाद ही गायत्री जप तथा वेदाध्ययन का अधिकार प्राप्त होता था और इसके साथ ही योग्य गुरु के अधिकार में गुरुकुल में जो कि घर से कहीं सुदूर क्षेत्र में होता था, रहकर 25 से 30 वर्ष वेद तथा वेदांग शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरूक्त, छन्द और ज्योतिष के साथ-साथ अपने वर्णानुसार शिक्षा प्राप्त करते थे। गुरु के आदेशों का पूरी तरह पालन करते हुए श्रद्धा से नतमस्तक रहते थे। जैसे श्रीमद्भागवत में कहा है-

ब्रह्मचारी गुरुकुले वसन्दान्तो गुरोर्हितम्।
आचरन्दासवन्नीचो गुरोर्सुदृढ़ सौहृद:॥

ऐसे अनुशासित शिष्य को गुरु महाव्याहृतियों के साथ वेदाध्ययन कराता हुआ सदाचार का उपदेश करता था। गुरु दैनिक कृत्संध्या, यज्ञ, श्रमदान, सेवा, परोपकार तथा ईश्वर-चिन्तन के लिए भी अधिक जोर देते थे। गायत्री जप तो सभी विद्यार्थियों के लिए अति आवश्यक था।

गुरुकुलवासी छात्र पलाश आदि का दण्ड धारण करता था और भिक्षा मागकर पहले गुरुदेव को सारी भिक्षा सौंपकर फिर गुरु से प्रसाद ग्रहण करके गुरुकुल की परम्परा का निर्वाह करता था। श्रीमद्भागवत के अनुसार-

सायं प्रातश्चरेद् भैक्षं गुरवे तन्निवेदयेत्।
भुञ्जीत यद्यनुज्ञातो नो चेदुपवसेत् क्वचित्॥

याज्ञवल्क्यस्मृति में भी कहा गया है-

''ब्राह्मणक्षत्रियविशां भैक्षचर्या यथाक्रमम्॥''

गुरुकुल में अनेक स्थानों के विद्यार्थी अध्ययन करते थे तथा अपने वर्णानुसार मर्यादाओं का पालन करते थे। गुरु की सेवा में शिष्य पूर्ण रूप से समर्पित रहकर अध्ययन करता हुआ आशीर्वाद व योग्यता प्राप्त करता था। उज्जयिनी में सान्दीपनी के आश्रम में अध्ययन करते हुए भगवान् श्रीकृष्ण गुरु की सेवा जंगल से काष्ठादि लाकर करते थे और अन्त में गुरु के लिए दक्षिणा रूप में उनके मृत पुत्र को यमराज के यहां से लाकर सौंपते हुए गुरुदेव से कीर्ति और वेदज्ञान-प्राप्ति का आशीर्वाद प्राप्त किया।

गुरुकुल में रहता हुआ विद्यार्थी अपने माता-पिता की अपेक्षा गुरुदेव से अधिक प्यार, दुलार, हितादि को प्राप्त करता था। गुरु शिष्य को मुक्ति प्राप्त करने तक की विद्या प्रदान करता था। **'सा विद्या या विमुक्तये'** के अनुसार विद्या से मुक्ति प्राप्त होती थी। गुरु द्वारा पढ़ाई जाने वाली विद्या का अधिकारी कोई शिष्ट शिष्य ही होता था। क्योंकि श्रेष्ठ का आचरण अन्यों के लिए अनुकरणीय होता है। जैसा कि श्रीमद्भागवद गीता में भगवान् श्रीकृष्ण ने कहा-

यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जन:।
स यत्प्रमाणं कुरूते लोकस्तदनुवर्तत।

प्राचीन भारत गुरुकुल शिक्षा से ही व्यवस्थित संस्कृति की पहचान वाला देश था और तभी यह सोने की चिड़िया कहलाकर अपनी धनाढ्यता सिद्ध करता था। वर्तमान समय में गुरुजनों के प्रति उपेक्षा के भाव ने संस्कृति का रूप क्षत-विक्षत-सा कर दिया है।

- आचार्य अनिल शास्त्री

मेरा भारत ऐसा महान बने

जहाँ विद्वानों का मान बढ़े
ज्ञान और विज्ञान परवान चढ़े
जहाँ शासक प्रजा का दास रहे
हर जन का उस पर विश्वास रहे
मेरा भारत ऐसा महान बने!

जहाँ न्यायाधीश निष्पक्ष रहें
और विवेकशील बन न्याय करें
जहाँ सेनाएँ हर दम तैयार रहें
और किसानों के गोदाम भरें
मेरा भारत ऐसा महान बने!

जहाँ सन्तानें आज्ञाकारी बनें
बलवान हों और तेजधारी बनें
जहाँ नारियों की सब वन्दना करें
और पितरों की सब अर्चना करें
मेरा भारत ऐसा महान बने!

जहाँ शुभ आचार-विचार बनें
आपस में सब कोई प्यार करें
सब पूजा-यज्ञ-हवन करें
जहाँ देव सदा प्रसन्न रहें
मेरा भारत ऐसा महान बने!

-गणपत राय टक्कर, काशिफ

परिवार कल्याण के लिए माता-पिता व बुजुर्गों का दायित्व

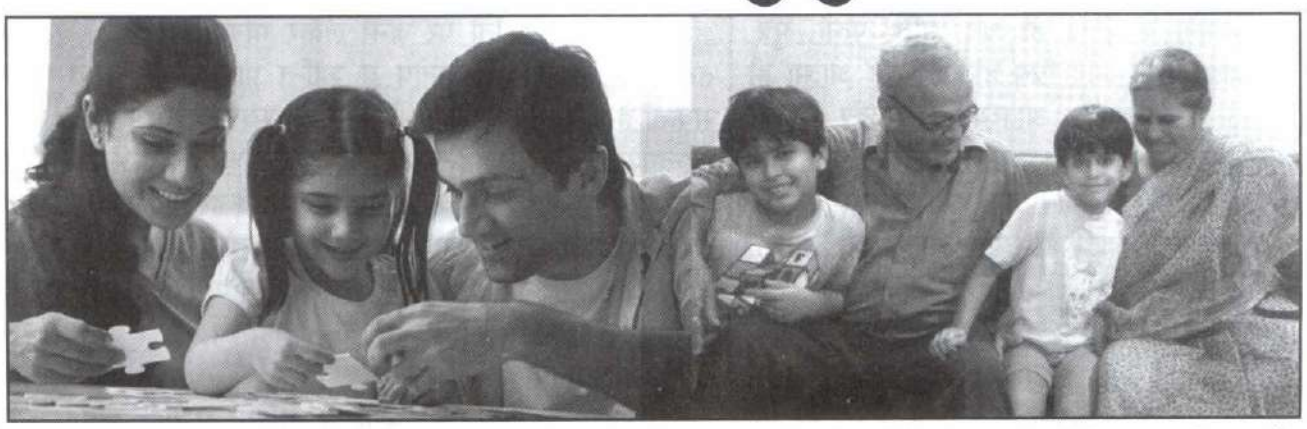

बच्चे और युवा हमारे देश भारत के भविष्य हैं और वे आपकी आशा हैं। उनको अपने परिवार, कल्याण तथा देश भारत के मान-सम्मान और आदर हेतु प्रारंभ से ही संस्कारवान् बनायें। स्वयं उदाहरण बनकर उनमें अच्छी-अच्छी आदतें डालें जो मानव को उचित-अनुचित का ज्ञान कराकर उसे सहज, मानवीय, आदर्श मानव बनकर आधुनिक समयानुकूल आचरण करने की प्रेरणा दें। कभी-कभी हम, हम दो और हमारे दो के सिद्धांत के अनुसार उसे ही परिवार मान लेते हैं जिससे देश में एकल परिवार और मां-बाप से अलग रहने की प्रवृति पनप रही है। पर उसके लिए उत्तरदायी हम ही हैं। भारतीय संस्कृति में मनुष्य दैवी शक्ति है। जन्म लेने वाला प्रत्येक बालक अपनी तरह के संस्कार लेकर आता है। पर उन्हें नई दिशा देकर उपयोगी और परिपक्व बनाने का उत्तरदायित्व उस बालक का नहीं, माता-पिता, वरिष्ठजनों, परिवार और समाज का होता है। युवक तभी भटकते हैं, जब उन्हें वरिष्ठों से समुचित दिशा नहीं मिलती।

हमें बच्चों को ऐसी शिक्षा देनी चाहिए, जिससे उनका चरित्र बने, मानसिक बल बढ़े, बुद्धि का विकास हो और जिससे मनुष्य अपने पैरों पर खड़ा हो सके व समाज और राष्ट्र के लिए उपयोगी हो। अत: अच्छी प्रकार की शिक्षा का उद्देश्य मनुष्य निर्माण ही है। सारे संस्कारों व प्रशिक्षणों का अंतिम ध्येय मनुष्य का विकास करना ही है।

विज्ञान ने मनुष्य को मशीनें देकर उसकी उत्पादन क्षमता को बढ़ा दिया और कार्य को सहज बना दिया है परन्तु दूसरी ओर मनुष्य का हृदय मशीन की तरह कठोर हो गया है। मन से दया, करूणा, सहृदयता और देशभक्ति की भावना उठ गई है। विज्ञान ने मनुष्य को बुद्धि का विकास तो दिया परन्तु बुद्धि की दिव्यता छीन ली है। उसने मनुष्य को बिजली और अणु शक्ति तो दी है परन्तु उससे आत्मिक शक्ति और देशभक्ति ले ली है।

स्वामी विवेकानन्द ने कहा था, 'जो ज्ञान और संस्कार साधारण व्यक्ति को जीवन संग्राम में समर्थ नहीं बना सकता, जो मनुष्य में चरित्र-बल, परहित भावना, नैतिकता तथा सिंह के समान साहस नहीं ला सकता, वह भी क्या कोई ज्ञान (शिक्षा) है। ज्ञान अन्तर्निहित है, वह बाहर से नहीं प्राप्त होता, संस्कारों से आता है।

महात्मा गांधी ने कहा था 'ज्ञान का अंतिम लक्ष्य चरित्र निर्माण है और अच्छे चरित्र का आधार संस्कारयुक्त शिक्षा है, जो मनुष्य को देशभक्त बनाती है।

संसार में कौन माता-पिता नहीं चाहेंगे कि उनके बच्चे सभ्य समाज की एक कड़ी बने, महान् देशभक्त बनें, उनकी आकांक्षाओं के अनुरूप बनकर उनका तथा स्वयं का नाम उज्ज्वल करें। परन्तु आज के माता-पिता बच्चों को केवल धन-दौलत से सम्पन्न तो देखना चाहते हैं पर मानव नहीं बनाना चाहते, उनमें मानव मूल्य नहीं भरना चाहते। फिर यह सब कैसे होगा? इसके लिए बच्चों के सामने स्वयं अपने से बड़ों का आदर और अभिवादन करें। इसके लिए माता-पिता का त्याग, परिश्रम तथा अथक प्रयास व लगन के साथ बच्चे की नींव मजबूत बनानी होगी। उसमें परोपकार, शालीनता, प्रेम, संस्कार भरने होगें।

दादा-दादी, माता-पिता परिवार के ऐसे सदस्य होते हैं, जिनके सम्पर्क में बच्चा सबसे अधिक रहता है। बचपन से लेकर ठीक से होश संभालने तक वह माता के ही पास रहता है। जब बच्चा शिशु होता है, उसमें उचित संस्कार ठीक ढंग से लालन-पालन करते समय डालें। बच्चों में ऐसी भावना भरनी चाहिए कि वे अपने से बड़ों का सम्मान करें, उनसे शिष्टाचार के साथ बातें कर सकें। सादगी अपने आप में एक बहुत बड़ा गुण है। बच्चों को इसकी शिक्षा दी जानी चाहिए। बच्चों के पहनावे का विशेष ध्यान रखना चाहिए। भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद, ईश्वर चन्द्र विद्यासागर इसकी प्रतिमूर्ति थे। उनका उदाहरण हमें बच्चों को देना चाहिए।

बच्चों में अनुशासन और आज्ञा पालन की प्रवृत्ति के विकास को उत्सुक माता-पिता, दादा-दादी, जब अनुशासन संबंधी आदेश-निर्देश रौब दिखाकर या दबाव डालते हुए देते हैं, उस समय उन्हें स्मरण रखना चाहिए कि यह व्यवहार बच्चों और युवकों में विरोध-विद्रोह की भावना जगाएगा। यदि प्रारंभिक उपेक्षा के क्रम में बच्चे ने अनसुनी कर दी, तब तो उनमें अनुशासनहीनता के बीज शुरु से अंकुरित हो उठते हैं, जो भविष्य में घातक बनते हैं और अनादर करने की प्रवृत्ति आती है।

बच्चों को आवश्यक रूप में बार-बार टोकना भी ठीक नहीं, क्योंकि बच्चे स्वभावत: चंचल होते हैं। बच्चों की सहज अनुकरण बुद्धि को सदा ध्यान में रखना चाहिए। माता-पिता को भी बच्चों के सामने परस्पर शालीनता का व्यवहार करना चाहिए।

कच्चे लोहे को पिघलाकर इस्पात ढालने की अपनी विधा होती है। पेट्रोलियम से मोबील आयल निकालते हैं। बच्चे के कुसंस्कार वे चाहे कितने ही जन्मों से जड़ पकड़े हुए हों, उन्हें भी सुधारा और संवारा जाना बिल्कुल आसान बात है, यदि हम बच्चे को मनोवैज्ञानिक ढंग से शिक्षा व दिशा और वातावरण दे सकें। उदाहरणत: यदि बच्चे में गीत गाने एवं संगीत की प्रवृत्ति है तो उसे प्रेरणाप्रद राष्ट्रीय गीत गाने की, भजनों, कहानियों, नाटक और अच्छे गीत सिखाने की जिम्मेदारी बच्चों के माता-पिता और संबंधियों की होती है, क्योंकि इससे अभिवादनशीलता आती है।

जिन बच्चों में आरंभ से माता-पिता वरिष्ठ जनों द्वारा सेवा की भावना का स्वस्थ विकास कर दिया जाता है, वे आगे चलकर अपने सेवा-भाव से समाज में प्रतिष्ठा के पात्र बन जाते हैं और समाज के आदर्श हो जाते हैं। राष्ट्रभक्ति सेवा-पथ से चलकर हजारों ऐसे व्यक्ति उन्नति के महान् शिखरों पर पहुंचे हैं। डॉ. राजेन्द्र प्रसाद, भारत रत्न, मदन मोहन मालवीय, सुभाष चन्द्र बोस, दीनदयाल उपाध्याय, वीर सावरकर और लाल बहादुर शास्त्री, विनोबा भावे इसके प्रत्यक्ष उदाहरण हैं, जिन्होंने देशभक्ति की भावना सभी में जाग्रत की, अपने परिवार का कल्याण कर विश्व में परिवार का नाम अमर किया है।

- महेश चन्द्र शर्मा

जागें सूरज से पहले

स्वस्थ रहने के लिए सुबह सूर्योदय से पहले उठने की आदत डालें। यह दिमाग और शरीर को तरोताजा रखने के साथ प्रतिरक्षा तन्त्र को भी मजबूत करता है। साथ ही, आपको दिन भर की योजना बनाने के लिए पर्याप्त समय भी मिल जाता है। इसके अन्य फायदे इस प्रकार है।

रक्त संचार दुरूस्त होता है। ❑ रात में नींद अच्छी और गहरी आती है। ❑ कब्ज और अपच की समस्या नहीं रहती। ❑ सुबह के वक्त ओस से भीगी हरी घास पर टहलने से आंखों की रोशनी तेज होती है। यह हाई ब्लड प्रेशर के मरीजों के लिए भी फायदेमन्द है। ❑ टहलने के बाद कुछ समय के लिए एकांत में बैठकर ध्यान और योग करें। ❑ सुबह के वक्त याद किया गया अध्याय जल्दी भूलता नहीं।

आदत कैसे डालें- जितने बजे उठते है, उससे 15-30 मिनट पहले उठना शुरु करें। ❑ अलार्म घड़ी को बिस्तर के पास रखने की बजाय कुछ दूर रखें। ❑ रात में देर तक टीवी न देखें। समय से सोना चाहिए। ❑ छुट्टी के दिन देर तक नहीं सोना चाहिए। इससे पूरे हफ्ते का चक्र गड़बड़ा जाता है।

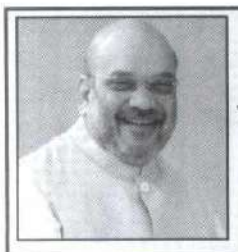

भारत सरकार का दूरदर्शी निर्णय
नागरिकता संशोधन कानून
शुद्धि सभा पूर्ण समर्थन करती है।

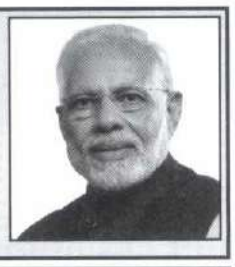

दिसम्बर 2019 के आर्थिक सहयोगी

1.	अखिल भारतीय आर्य (हिन्दू) धर्म सेवा संघ, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली	7200/-
2.	ब्रिगेडियर के.पी. गुप्ता जी, सैक्टर-15 ए, फरीदाबाद	1000/- मासिक
3.	आर्य समाज अनारकली मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली	1000/-मासिक
4.	आर्य समाज साकेत, नई दिल्ली	800/- मासिक
5.	श्री चतर सिंह नागर जी, संरक्षक, भा. हिन्दू शुद्धि सभा	500/-मासिक
6.	श्री शिव कुमार मदान जी ट्रस्टी, जनकपुरी, नई दिल्ली	200/- मासिक
7.	श्रीमती सुशीला चावला जी, पीतमपुरा, दिल्ली	100/-मासिक

श्रीमती सुदेश तलवार जी द्वारा एकत्रित दान
(नवम्बर-दिसम्बर 2019)

1.	श्रीमती वासंती चौधरी जी, आर्य महिला आश्रम, न्यू राजेन्द नगर	1000/-
2.	श्रीमती कैलाश कपूर जी, आर्य महिला आश्रम, न्यू राजेन्द नगर	200/-
3.	श्रीमती सुदेश तलवार जी, आर्य महिला आश्रम, न्यू राजेन्द नगर	200/-
4.	श्रीमती कमला डावर जी, आर्य महिला आश्रम, न्यू राजेन्द नगर	200/-
5.	श्रीमती मृदुला रस्तोगी जी, आर्य महिला आश्रम, न्यू राजेन्द्र नगर	200/-
6.	श्रीमती इन्दू बिज जी, आर्य महिला आश्रम, न्यू राजेन्द्र नगर	100/-
7.	श्रीमती सन्तोष हिंगल जी, आर्य महिला आश्रम, न्यू राजेन्द्र नगर	100/-

शुद्धि सभा के नवनिर्वाचित प्रधान श्री रणवीर सिंह जी द्वारा शुद्धि सभा के बनाये गये आजीवन सदस्य

1.	श्री करण सिंह तंवर जी, आर्य समाज नारायणा विहार, नई दिल्ली	2100/-
2.	श्री अशोक मेहता जी, आर्य समाज नारायणा विहार, नई दिल्ली	2100/-
3.	श्री संजीव पुरी जी, आर्य समाज इन्द्रपुरी, नई दिल्ली	2100/-
4.	श्री रविन्द्र गर्ग जी, आर्य समाज, नारायणा विहार, दिल्ली	2100/-
5.	श्री सुनील कोहली जी, आर्य समाज, नारायणा विहार, दिल्ली	2100/-
6.	श्री नरेश कुमार वर्मा जी प्रधान, आर्य समाज इन्द्रपुरी, नई दिल्ली	2100/-
7.	डॉ. सुदर्शन रहेजा जी, आर्य समाज, नारायणा विहार, नई दिल्ली	2100/-
8.	श्री सतीश कामरा जी, आर्य समाज, नारायणा विहार, नई दिल्ली	2100/-
9.	श्री मनोहर लाल गुलाटी जी, आर्य समाज, विहार, नई दिल्ली	2100/-
10.	श्री प्रदीप डिमरी जी, दूसरी मंजिल, नारायणा गांव, नई दिल्ली	2100/-
11.	श्री विजय कुमार घई जी, नारायणा विहार, नई दिल्ली	2100/-
12.	श्री चौ. सतीश तंवर जी, नारायणा विहार, दिल्ली	2100/-

93वां स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के तत्वाधान में गुरुकुल कांगड़ी के संस्थापक स्वतन्त्रता सेनानी समाज सुधारक का 93वां स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस श्री प्रवेश वर्मा संसद सदस्य के निवास स्थान 20 विंडसर पैलेस जनपथ नई दिल्ली में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर आचार्य गवेन्द्र शास्त्री ने यज्ञ करवा व उन्होंने कहा कि स्वामी श्रद्धानन्द जी का सम्पूर्ण जीवन दर्शन मानव मात्र के लिए स्तुल्य प्रेरणा का स्त्रोत है। मुख्य अतिथि श्री प्रवेश वर्मा जी ने कहा स्वामी श्रद्धानन्द ऐसे ही नि:स्वार्थ कार्य करने वाले धर्म और कर्म योद्धा थे। श्री अनिल आर्य जी ने कहा हिन्दू और मुसलमानों का यदि कोई सर्वमान्य नेता था तो वे स्वामी श्रद्धानन्द ही थे।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के 41 वें वार्षिकोत्सव के उपलक्ष्य में

स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी प्रणवानन्द जी, स्वामी धर्ममुनि जी, स्वामी श्रद्धानन्द जी के सानिध्य में

डॉ. अशोक कुमार चौहान की अध्यक्षता व आचार्य अखिलेश्वर जी के ब्रह्मत्व में

वायु प्रदुषण व पर्यावरण की शुद्धि के लिए

251 कुण्डीय विराट् यज्ञ

एवम्

अखिल भारतीय आर्य महासम्मेलन

दिनांक : 31 जनवरी व 1, 2 फरवरी 2020 (शुक्र, शनि व रविवार)

समारोह स्थान: रामलीला मैदान,पी.यू ब्लाक,विशाखा एनक्लेव,पीतमपुरा, दिल्ली (निकट मैट्रो स्टेशन कोहाट एनक्लेव)

राष्ट्रीय एकता तिरंगा यात्रा : शनिवार 1 फरवरी 2020, प्रातः 10.30 बजे

संयोजक अनिल आर्य, 9868051444, 9810117464

शोक समाचारः विनम्र श्रद्धांजलि

1. श्री बलदेव सचदेवा (आर्य समाज, डी ब्लॉक, विकासपुरी) का निधन।
2. श्री सोमदत्त महाजन (आर्य समाज सी ब्लॉक, जनकपुरी) का निधन।
3. डॉ. अभय देवशर्मा (वेद संस्थान, राजौरी गार्डन) का निधन।
4. श्रीमती सुलक्षणा गुप्ता (आर्य समाज, पश्चिम विहार) का निधन।
5. आर्य भजनोपदेशक श्री बृजपाल कर्मठ का निधन।
5. श्री चौधरी लक्ष्मी चन्द (आर्य समाज दीवान हॉल) का निधन।

स्वामी श्रद्धानन्द द्वारा अव्यवस्था में से व्यवस्था पैदा करना

स्वामी श्रद्धानन्द संन्यास ले चुके थे। गुरुकुल के मुख्याधिष्ठाता और आचार्य पद को अन्य कार्यकर्त्ताओं ने सम्भाल लिया था। गुरुकुल का उत्सव हो रहा था, उत्सव के निमित्त आकर वे उसी प्रसिद्ध गंगा तट वाले बंगले में ठहरे हुए थे। उत्सव का सबसे मुख्य व्याख्यान हो रहा था, इतने में दर्शकों को निवास-स्थल की ओर से उठता हुआ धुआं दिखाई दिया। क्षणभर में शोर मच गया-आग लग गई, आग लग गई। पाण्डाल एकदम खाली हो गया। सब लोग कैम्प की ओर भागे। वहां जाकर देखा तो फूस, छप्पर, बारूद के ढेर धूं-धूं करके जल रहे थे। दर्शक लोग पागलों की तरह चारों ओर भागने लगे और शोर मचाने लगे। बीसियों बच्चे कैम्प में सोए पड़े थे। इस भयानक आग में घुसकर कौन उनको बचाए। यह नहीं सूझता थ कि फूस में लगी आग बुझेगी कैसे? कुछ देर तक आर्तनाद और हाहाकर के सिवाय कुछ सुनाई नहीं देता था। इतने में स्वामीजी आ गए तथा सारी स्थिति का निरीक्षण, करके कार्यकर्त्ताओं को फावड़े, टोकरियां, घड़े, बाल्टियां लाने के लिए भेजकर और स्वयं सबको साथ लेकर आग के पास पहुंचे और दर्शकों को स्वयंसेवक दलों के रूप में विभक्त कर दिया। एक दल को आज्ञा दी कि हाथों में या कपड़ों में भरकर जैसी भी हो, मिट्टी और रेत लेकर आग पर डालो। दूसरे दल को आज्ञा दी कि जिन छप्परों पर आग नहीं लगी, उनका सामान निकालकर बहुत दूरी पर रख दो और यथाशक्ति घसीटकर आग से दूर ले जाओ। इतने में फावड़े, टोकरियां, बाल्टियां, घड़े सब चीजें आ पहुंची। एक दल मिट्टी खोदने लगा, दूसरा उसे टोकरियों में डालकर आग में डालने लगा, तीसरे दल ने कुंए तक लम्बी लाइन लगा दी, जहां से घड़ों और बाल्टियों द्वारा पानी आने लगा। आर्तनाद बन्द हो गया। बन्द अव्यवस्था हो गई और लगभग आधा घण्टे भर में आग शांत हो गई। स्वामी जी जैसे नेता ही ऐसे समय में अव्यवस्था में से व्यवस्था पैदा कर सकते हैं।

R.N.I.No. 43084/76
Date of Publication 01-01-2020

Delhi Postal R.No. G-3/DL (N) 060/20.. ..
Posting Date: 2-3 Every Month

सेवा में,

शुद्धि समाचार

जनवरी-2020

भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा के नियमित दिनांक 23.11.2019 को गठित आगामी तीन वर्षों के लिए नवीन कार्यकारिणी

<u>संरक्षक</u>

1. ठा. विक्रम सिंह जी
2. श्री रामनाथ सहगल जी
3. श्री हरबंशलाल कोहली जी
4. श्री नरेन्द्र मोहन वलेचा जी
5. श्री चतर सिंह नागर जी
6. श्री अशोक सहगल जी
7. श्री ओमप्रकाश अग्रवाल जी
8. श्रीमती ललिता निझावन जी
9. श्री विजय गुप्त जी
10. श्री सतनाम अरोड़ा जी

<u>प्रधान</u>

1. श्री रणबीर सिंह जी
नारायणा विहार,
नई दिल्ली-110028

<u>उप-प्रधान</u>

1. डॉ. पूर्ण सिंह डबास जी
2. श्रीमती आदर्श सहगल जी
3. श्री विजय कुमार बत्रा जी
4. श्री कीर्ति शर्मा जी
5. श्री ईश कुमार नारंग जी,
6. श्री अजय सहगल जी
7. श्री ओमप्रकाश यजुर्वेदी जी

<u>महामन्त्री</u>

1. श्री सुभाष चन्द्र दुआ जी
सुशान्त लोक-I,
गुरुग्राम-122009, हरियाणा

<u>मन्त्री</u>

1. श्री एस. के. कोचर जी
2. श्री सूर्यपाल सिंह जी
3. श्रीमती सन्तोष वधवा जी
4. श्रीमती सावित्री शर्मा जी
5. श्री राजीव भाटिया जी
6. श्री राजेन्द्र कुमार दुर्गा जी
7. श्री धर्मवीर पंवार जी

<u>कोषाध्यक्ष</u>

1. श्री सुरेन्द्र गुप्त जी

<u>सह-कोषाध्यक्ष</u>

1. श्री ओमवीर सिंह जी

<u>कानूनी सलाहकार</u>

1. श्री सुरेश चुघ जी

<u>प्रतिष्ठित सदस्य</u>

1. श्री शिवकुमार मदान जी
2. श्री अशोक सहदेव जी
3. श्री विनोद कद जी
4. श्री वी. के. गुप्ता जी

<u>अन्तरंग सदस्य</u>

1. श्री सुभाष चन्द्र चांदना जी
2. श्री विजय कपूर जी
3. श्रीमती वासन्ती चौधरी जी
4. श्री स्वदेश पाल गुप्ता जी
5. श्री भीमसैन कामराह जी
6. श्री नाहर सिंह वर्मा जी
7. श्री के. एल. राणा जी
8. श्री भीष्म लाल जी
9. श्री एस. एम. गुप्ता जी
10. श्री राजेश मैंदीरत्ता जी
11. श्री जितेन्द्र डाबर जी
12. मेजर एस. पी. कोहली जी
13. श्री शशिकान्त जी
14. डॉ. जे. एस. वालियान जी
15. श्रीमती जगदीश वधवा जी
16. श्री दीप नारायण मिश्रा जी
17. श्री अतुल अरोड़ा जी
18. श्री करण सिंह तंवर जी,

<u>सदस्य</u>

1. श्री अशोक कुमार सरदाना जी
2. श्री हरीचन्द आर्य जी
3. श्री मुनीश कुमार गौड़ जी
4. श्रीमती गीता झा जी
5. श्री इन्द्रदेव गुलाटी जी
6. श्री सुरेन्द्र आर्य जी
7. आचार्य श्याम लाल जी 'प्रिंसिपल'
8. श्री रमेश आर्य जी
9. श्री संजीव पुरी जी
10. श्री रविन्द्र गर्ग जी
11. श्री सुनील कोहली जी
12. श्री नरेश कुमार वर्मा जी
13. डॉ. सुदर्शन रहेजा जी
14. श्री सतीश कामरा जी
15. श्री मनोहर लाल गुलाटी जी
16. श्री सुधीर चन्द्र घई जी
17. श्री हरीश कालरा जी
18. श्री राकेश भटनागर जी
19. श्री कृष्ण बवेजा जी
20. श्रीमती प्रेमलता भटनागर जी
21. श्री जगदीश लाल मदान जी
22. श्री वेद प्रकाश मुनि जी

<u>परामर्शदाता</u>

1. डॉ. महेश विद्यालंकार जी
2. आचार्य विद्या प्रसाद मिश्र जी 'धर्माचार्य'
3. आचार्य श्यामदेव शास्त्री जी 'धर्माचार्य'
4. आचार्य गवेन्द्र शास्त्री जी 'संपादक' शुद्धि समाचार मासिक
5. प्रो. सारस्वत मोहन मनीषी जी

क्रोध क्यों नहीं आता

संत एक नाथ से किसी ने जानना चाहा कि "आप भी हमारी तरह मनुष्य हैं, हम सब एक ही मिट्टी के बने हैं लेकिन हमारी तरह आपको गुस्सा क्यों नहीं आता?" एकनाथ ने कहा कि देखो भाई एक तो हमें हमेशा याद रहता है कि हम इस दुनिया में थोड़े दिनों की जिन्दगी लेकर आये हैं, तो जाने कब वापस जाना पड़े। दूसरे यह जिन्दगी तो प्यार करने के लिए और अच्छा व्यवहार करने के लिए ही थोड़ी है, तो झगड़े के लिए कहां से समय निकालें। तीसरी बात यदि किसी पर क्रोध करना भी चाहता हूँ तो हर जगह, हर किसी में मुझे मेरा परमात्मा बैठा नजर आता है, हर इंसान के अंदर उसी के दर्शन होते हैं। इसलिए मैं डरता रहता हूँ कि यदि क्रोध किया तो मेरे परमात्मा की कृपा मुझसे दूर हट जायेगी। इसलिए मैं क्रोध नहीं करता। **" हर गुस्सा किसी मूर्खता से शुरु होता है और पश्चात्ताप पर जाकर खत्म हो जाता है।"**

मुद्रक व प्रकाशक-रामनाथ सहगल द्वारा मयंक प्रिन्टर्स-2199/63, नाईवाला करोल बाग, नई दिल्ली-110005, से मुद्रित एवं भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा, 6949, बिड़ला लाइन दिल्ली-7, दूरभाष: 9711258445, 9718550459 से प्रकाशित। सम्पादकः डॉ. भारद्वाज पाण्डेय